17 अगस्त 2008, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

संसार दु:खों से मुक्त होने के लिये मुक्ति के मार्ग का पथिक होना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।

ह्न बा. भावना अनुशीलन : पृष्ठ ह्न 56

वर्ष : 31, अंक : 10 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अगस्त (द्वितीय), 2008 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

३१ वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा ३१ वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर दिनांक ३ अगस्त से १२ अगस्त, २००८ अनेक मांगलिक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

रविवार, दिनांक ३ अगस्त को कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रात: पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनोपरान्त श्री बाबूभाई एम. दोशी कडियादरा के करकमलों से ध्वजारोहण पूर्वक हुआ। प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार किशनगढ ने किया। मंच उद्घाटन कर्त्ता श्री जमनालालजी कैलाशचन्दजी सेठी परिवार जयपुर थे। शिक्षण-शिविर का उद्घाटन श्री अजितभाई मीठालाल मेहता अहमदाबाद परिवार ने किया।

शिविर में प्रतिदिन गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी के दोनों समय प्रवचनों के साथ-साथ पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, डॉ.दीपकजी जैन जयपुर एवं पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ के प्रवचन हुये।

प्रतिदिन चलनेवाली प्रौढ कक्षाओं में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा दृष्टि का विषय, ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा क्रमबद्ध पर्याय, पण्डित मनीषजी शास्त्री द्वारा (ब्र.जतीशचन्दजी के सान्निध्य में) छहढाला एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई।

दोपहर की सभा में प्रतिदिन बाबू जुगलकिशोरजी युगल के सी.डी. प्रवचन एवं महाविद्यालय की छात्र विद्वान प्रवचन के उपरान्त विशिष्ट व्याख्यानों में डॉ. अशोकजी गोयल दिल्ली, डॉ. मुकेशजी शास्त्री विदिशा, डॉ. नरेन्द्रजी जैन जयपुर डॉ. अरविन्दजी शास्त्री सुजानगढ, डॉ. धनकुमारजी भवानीमंडी, डॉ. भागचन्दजी शास्त्री, पण्डित प्रकाशचन्दजी ज्योतिर्विद मैनपुरी एवं पण्डित अमितजी शास्त्री गुना आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रात: ५.३० बजे चलनेवाली प्रौढ कक्षा में पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना, पण्डित मानमलजी जैन कोटा, पण्डित कमलचन्दजी जैन पिडावा, पण्डित सुरेशचन्दजी टीकमगढ, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर के अवसर पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पूर्व डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया के निर्देशन में बाल कक्षा एवं 'प्रमाणज्ञान' विषय पर युवाओं की कक्षा संचालित की गई।

शिविर के मध्य २७ नवीन पुस्तकों का विमोचन हुआ।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी ध.प. श्रीमती रतनदेवी पाटनी व सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी कोलकाता, श्री नरेशजी जैन अहमदाबाद, श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा तथा श्री नवीनचन्द केशवलालजी मेहता मुम्बई थे।

प्रात: चौबीस तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधान के आमंत्रणकर्ता श्री बाबूलालजी पंचाली थांदला इन्दौर, श्री प्रवीणचन्दजी शाह जयपुर, श्री शिखरचन्दजी सर्राफ विदिशा, श्री केशवचन्दजी सुधांशु जैन कुरावली, स्व. विमलचन्दजी एवं स्व. ऋषभकुमारजी जैन की स्मृति में बडकुल परिवार विदिशा, श्री खुशालचन्द जैन सर्राफ खिमलासा, श्री रतनलालजी मेहता नातेपुते एवं श्री अमोलकचन्दजी जैन गुना थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल एवं पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर ने सम्पन्न कराये।

दिनांक १० अगस्त, रविवार को श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट सलाहकार समिति का अधिवेशन रखा गया। जिसकी अध्यक्षता श्री सुमनभाई दोशी, राजकोट ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अजितभाई बडौदा मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन श्री महीपालजी जैन बांसवाडा ने किया।

शिविर में विशिष्ट गणमान्य अतिथियों के रूप में श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई, श्री अमृतभाई मेहता फतेपुर, श्री पूनमचन्दजी सेठी दिल्ली, श्री अशोकजी पाटनी (आर.के.मार्बल्स) किशनगढ, श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा, श्री पदमचन्दजी पहाडिया इन्दौर, श्री अभिनन्दनप्रसादजी सहारनपुर, श्री बीनूभाई मुम्बई, श्री अश्विनभाई मुम्बई, श्री सुमनभाई दोशी राजकोट आदि शिविर में पधारे।

सभी कार्यक्रम ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली, श्री महापालजी ज्ञायक बांसवाड़ा एवं श्री अमृतभाई मेहता फतेपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

शिविर में लगभग १५०० लोग लाभान्वित हुये। लगभग ४० हजार रुपये का साहित्य बिक्री हुआ एवं १ लाख ५० हजार रुपयों के साहित्य का ऑर्डर बुक किया गया। डॉ. भारिल्ल एवं अन्य विद्वानों के ४५ हजार घण्टों के प्रवचन डी.वी.डी एवं सी.डी. के माध्यम से घर-घर पहुँचे। ●

सम्पादकीय – 12

चलते–फिरते सिद्धों से गुरु

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

आचार्यश्री के प्रवचन की प्रतीक्षा में बैठे–बैठे सहस्रों श्रोता विगत प्रवचन में आये विषयों की परस्पर चर्चा कर रहे थे और आचार्यश्री द्वारा दिये गये मार्गदर्शन की तथा तत्त्वज्ञान के सरल विवेचन के प्रति प्रसन्नता प्रगट करते हुए अपने भाग्य की सराहना कर रहे थे।

एक ने कविता में कहा ह्न

''मंगलमय अवसर आया, मुनिवर का प्रवचन पाया।
सुन कर मन हरषाया, मानव भव सफल बनाया।।''

दूसरा बोला ह्न ''वाह ! तुम तो आशुकवि हो। तत्काल कविता बना लेते हो। सचमुच हम सब बड़े भाग्यशाली हैं, अन्यथा किसे मिलते हैं ऐसे प्रवचन?''

तभी आचार्य महाराज ससंघ सभामंडप में पधार गये, श्रावकों द्वारा वंदना के पश्चात आचार्य श्री ने अपने व्याख्यान को प्रारंभ करते हुए कहा ह्न ''दिगम्बर मुनि के अन्तर–बाह्य स्वरूप की चर्चा के प्रसंग में आज मुनि की आहार चर्या तथा उनके बारह तप की चर्चा करेंगे।

सर्वप्रथम यह बतायेंगे कि आहार दाता कैसा होता है ? पात्र कैसा होता है और आहार तथा आहार की विधि कैसी होती है? ह्न इस सबकी संक्षिप्त चर्चा करने के बाद १२ तपों की आगम के आधार पर चर्चा करेंगे। अत: सभी श्रोता सावधान होकर सुनें और समझने का प्रयास करें।

श्रावक द्वारा नवधाभक्ति से ही आहार लेने के पीछे यद्यपि मुनियों को अपनी भक्ति कराने का लोभ नहीं होता, तथापि वे स्वाभिमान के साथ शुद्ध आहार लेते हैं। वे ऐसे वैराग्यवंत होते हैं कि ह्न शरीर के लिए सदोष और भिक्षा से आहार नहीं लेते। एतदर्थ श्रावक को नवधाभक्ति करना आवश्यक है, अन्यथा मुनि श्रावक के द्वार पर रुकेंगे ही नहीं।

नवधाभक्ति में मुनि को आहार के लिए अपने घर की ओर आते देखकर सर्वप्रथम श्रावक द्वारा श्रद्धापूर्वक कहा जाता है कि ह्न

१. हे स्वामी ! 'पधारो...पधारो...पधारो अथवा अत्र अत्र अत्र तिष्ठः तिष्ठः तिष्ठः' ह्न ऐसा तीन बार विनय सहित कहना प्रतिग्रह या पड़गाहन कहलाता है।
२. फिर 'मन वचन काय शुद्ध हैं' इसप्रकार शुद्धि बोलते हैं।
३. पड़गाहन के बाद उच्च आसन, पादप्रक्षाल (पैर धोना) होता है।
४. अर्चना/पूजन सामग्री (अष्ट द्रव्य) से विधिपूर्वक पूजन की जाती है।
५. आहार दाता घुटने टेककर पंचांग प्रणाम करता है।
६. मनशुद्धि हेतु संसार, व्यापार संबंधी अशुभ विकल्प नहीं करता।
७. वचनशुद्धि में आहारदान के समय कठोर वचन नहीं बोलता।
८. कायशुद्धि ह्न बाह्य शारीरिक अशुद्धि नहीं रखता।
९. आहारशुद्धि ह्न शास्त्रानुसार निर्दोष आहार हो ह्न

यह नवधा भक्ति साधु के स्वाभिमान की प्रतीक है।

इसप्रकार प्रसन्नतापूर्वक आहार देता है कि 'अहो ! धन्य मेरा भाग्य, जो मेरे आंगन में मुनिराज का आगमन हुआ।' इसप्रकार उत्तम पात्र मुनि को नवधाभक्तिपूर्वक और मध्यम–जघन्य पात्र को उनके योग्य विनय सहित आहार दान देता है।

मुनि की भ्रामरी या मधुकरी वृत्ति होती है। आहारदाता पर भाररूप हुए बिना आहार लेना भ्रामरी वृत्ति है। इस आहार को भ्रमराहार भी कहते हैं। जैसे भ्रमर फूलों को हानि पहुँचाये बिना फूलों का थोड़ा रस पीकर अपने को तृप्त कर लेता है, वैसे ही लोक में अपरिग्रही श्रमण दातार द्वारा दिये गये निर्दोष आहार को निर्दोष विधि से ग्रहण करते हैं।

मुनि के आहार की चर्चा करके यह कहा गया है कि ह्न अहिंसा धर्म की पूर्ण आराधना करनेवाला श्रमण अपने जीवन–निर्वाह के लिए भी किसी को कष्ट न पहुँचाये तथा जीवन को संयम और तपोमय बनाकर धर्म और धार्मिकों की एकता स्थापित करे।

'सूर्योदय के तीन घड़ी बाद से लेकर सूर्यास्त के तीन घड़ी पहले तक का काल आहार का काल है।'

तात्पर्य यह है कि गाँव, नगर आदि में सामान्यतया जिस काल में शुद्ध आहार तैयार होता है तथा ऋतु परिवर्तन के अनुसार यत्किंचित् परिवर्तित काल में साधु आहारचर्या के लिए गमन करते हैं।

वस्तुत: सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्ररूप रत्नत्रय धर्म का प्रथम साधन शरीर ही है, जिसे भोजन–पान–शयनादि के द्वारा धर्म साधन के अनुकूल रखना आवश्यक है, किन्तु इस दिशा में उतनी ही प्रवृत्ति होती है, जिससे इन्द्रियाँ अपने अधीन बनी रहें। इसीकारण मुनि का आहार शुभभाव है।

जो साधु ज्ञान और संयम की वृद्धि के लिए तथा ध्यान और अध्ययन के निमित्त यथालाभ भोजन ग्रहण करता है, वह साधु मोक्षमार्ग में रत है।

श्रमण आहारचर्या के लिए निकलने पर अपना आगमन सूचित करने के लिए शब्दादि के संकेत नहीं करते, अपितु बिजली की चमक के सदृश अपना शरीरमात्र दिखा देना ही पर्याप्त समझते हैं। यदि श्रावक पड़गाहन करे तथा संकल्पानुसार विधि मिल जाय तो श्रावकों द्वारा प्रार्थना करने पर वहीं खड़े होते हैं, जहाँ से दूसरे साधु भी खड़े होकर भोजन प्राप्त करते हैं।

जिस आहारदाता में पात्र के प्रति भक्ति, श्रद्धा एवं सन्तोष, निर्लोभता, क्षमा आदि गुण होते हैं, वह आहारदाता विशेष पुण्यार्जन करता है।

मुनि का आहार नवकोटि से शुद्ध हो, छयालीस दोषों से रहित हो, संयोजना से हीन हो, प्रमाण सहित हो, नवधाभक्तिपूर्वक दिया गया हो, अंगार और धूमदोषरहित हो, मोक्षयात्रा के लिए साधनमात्र हो तथा मल दोषों से रहित हो ह्न साधु ऐसा अनुदिष्ट आहार ग्रहण करते हैं। ऐसे निर्दोष आहार को ही उद्धिष्ट रहित आहार कहते हैं। इससे हटकर उद्दिष्ट शब्द का अन्य कुछ अर्थ नहीं है। **(क्रमश:)**

भक्तामर मंडल विधान सम्पन्न

भोपाल (म. प्र.) : यहाँ श्री सीमंधर जिनालय के दसवें वार्षिकोत्सव के अवसर पर डालचंद कमलश्री बाई सार्वजनिक ट्रस्ट द्वारा मुमुक्षु मंडल, महिला मंडल एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा भोपाल के सहयोग से आध्यात्मिक शिक्षण–शिविर एवं भक्तामर मंडल विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, पं. वीरेन्द्रजी आगरा, पं. अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पं. कस्तूरचंदजी विदिशा, ब्र. हेमचंदजी भोपाल, पं. राजमलजी जैन, ब्र. सत्येन्द्रजी मौ आदि विद्वानों का लाभ मिला।

बाल एवं युवा वर्ग में संस्कारों के लिये समर्पित संस्था ह्न

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन (रजि.) जबलपुर

आज के भौतिक वातावरण में जिनशासन को जीवंत बनाये रखना एक चुनौती जैसा है। जिनशासन को जीवंत बनाना स्वयं के साथ समाज के लिये कल्याणकारी है।

जिनशासन में वर्णित तत्त्वज्ञान जीवन में अनुकूल–प्रतिकूल परिस्थितियों में समता प्रदान करता है। पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी का अवतरण रेगिस्तान में पानी मिलने के समान है, जिनके प्रभाव से आज समाज में युवा और प्रौढ वर्ग के लिये निरंतर शिविर, प्रवचन, कक्षा, विधान आदि का आयोजन होता रहता है; परन्तु बाल वर्ग के लिये वर्ष में सामान्यत: एक शिविर का ही आयोजन हो पाता है। यदि हमें जिनशासन के संस्कारों को अपने परिवार में अमरत्व प्रदान करना है तो बालवर्ग में अनेक प्रयास करने होंगे।

बाल एवं युवा वर्ग को संस्कारित करने की सामग्री उपलब्ध कराने के पावन उद्देश्य को मूलमंत्र बनाकर 2005 में स्थापित संस्था '**आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर (रजि.)**' ने इस क्षेत्र में कुछ सार्थक प्रयास किये हैं, जिनकी सफलता समाज को सर्वविदित ही है। संस्था ने सर्वप्रथम कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन द्वारा सन् 2005 में आयोजित सम्मेदशिखर के शिविर में विश्व का सर्वप्रथम जैन बालगीत ऑडियो कैसिट '**धरम करेंगे हम–हम–हम**' समाज को समर्पित की। इस कैसेट में समाहित 22 बालगीतों ने बालवर्ग को संजीवनी प्रदान की। यह कैसेट बालवर्ग में अत्यंत लोकप्रिय हुई। इसके बाद संस्था ने दूसरी कैसेट '**चलो पाठशाला चलें हम**' का निर्माण किया। इन दोनों कैसेट की सफलता से प्रेरित होकर विश्व का सर्वप्रथम बालगीत वीडियो **जैनी बच्चे सच्चे हम** का निर्माण किया। इस वीडियो ने संपूर्ण जैन समाज के साथ–साथ जैनेतर समाज में सफलता के कीर्तिमान स्थापित किये। इसकी सफलता से प्रेरित होकर बाद में चार और नवीन वीडियो का निर्माण किया जा चुका है, जिस के माध्यम से बच्चे निरंतर संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। इस महत्त्वपूर्ण कार्य में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना का सहज सहयोग और श्री विरागजी शास्त्री, जबलपुर का नेतृत्त्व प्राप्त हुआ है।

सभी को निरंतर रोचक व ज्ञानवर्द्धक सामग्री प्राप्त होती रहे इस भावना से संस्था ने आधुनिक विधा के साथ सचित्र रंगीन त्रैमासिक पत्रिका **चहकती चेतना** का प्रकाशन दिसम्बर 06 से प्रारंभ किया। अल्प समय में पत्रिका ने समाज में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है।

इसके अतिरिक्त समाज के प्रतिभाशाली छात्रों का सम्मान, छात्रवृत्ति वितरण, बाल संस्कार शिविरों में सहयोग, प्रतिवर्ष दीपावली पर पटाखा विरोधी पोस्टर का प्रकाशन आदि संस्था की मुख्य गतिविधियाँ हैं। भविष्य की योजना के अंतर्गत संस्था एनीमेशन गेम, बालगीत वीडियो–कहानी का निर्माण, बालगीत पुस्तक का प्रकाशन आदि प्रस्तावित हैं।

मुमुक्षु समाज के पवित्र सहयोग और स्नेह स्वरूप यह संस्था अपनी गतिविधियों में निरन्तर वृद्धि कर रही है। इन योजनाओं को तीव्रता से संचालित करने के लिये समाज का सहयोग निरन्तर अपेक्षित है।

सहयोग के रूप में आप अपने क्षेत्र में विविध अवसरों पर इन सी.डी. कैसेट्स को पुरस्कार स्वरूप अथवा प्रभावना में वितरित कर अपने धन का सदुपयोग कर सकते हैं। सी. डी. आपको मात्र 25 रुपये और डी.वी.डी. मात्र 40 रुपये में प्राप्त हो सकती है।

उपलब्ध सीडियाँ ह्न

1. जैनी बच्चे सच्चे हम
2. हम होंगे ज्ञानवान
3. वीर बनेगा बेटा
4. करलो जिनवर की पूजन
5. जिनधर्म की कहानियाँ
6. जैनी बच्चे और ज्ञानवान (डी.वी.डी.)

हमारे पवित्र उद्देश्यों की पूर्ति में आपका सहयोग अपेक्षित है। आप इसप्रकार हमारी योजनाओं में सहयोग कर सकते हैं।

परम संरक्षक ह्न ५१०००/– संरक्षक ह्न २१०००/–

परम सहायक ह्न ११०००/–सहायक ह्न ५१००/–

सदस्य ह्न २१००/–

चहकती चेतना के १ अंक प्रकाशन व्यय में सहयोग ह्न २१०००/–

निर्माणाधीन बालगीत सी.डी. में मुख्य सहयोगी ह्न २१०००/–

बालगीत पुस्तक एवं पटाखा पोस्टर के प्रकाशन में सहयोग ह्न स्वेच्छानुसार।

किसी भी प्रकार की सहयोग राशि **आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. जबलपुर** के नाम ड्राफ्ट, मनी ऑर्डर और चेक बनाकर सर्वोदय, 702, जैन टेलिकॉम, फूटाताल, जबलपुर म. प्र. के पते पर प्रेषित करें। मो. 9373294684

संस्था के एवं चहकती चेतना के सहयोगी सदस्य ह्न

परम संरक्षक ह्न श्रीमती भारतीबेन विपिन भाई भायाणी अमेरिका, सूरजबेन अमोलकराय स्मृति ट्रस्ट हस्तेश्री अनंतभाई सेठ मुम्बई, श्री आलोक जी जैन कानपुर, श्री ब्रजलाल जैन मुम्बई, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, डॉ. बासंती बेन शाह मुंबई। **संरक्षक ह्न** श्री विनोदजी जैन जयपुर, श्री रमेशचंदजी जयपुर, श्रीमती साधना पांड्या कोलकाता, श्री रणधीरसिंहजी जैन दिल्ली, श्री प्रकाशचंदजी जैन रांची, श्री महेन्द्र बड़जात्या इन्दौर।

विशिष्ट सहयोगी ह्न सुनील भाई जयंतीलाल शाह भायंदर मुम्बई, अहिंसा चेरिटेबल ट्रस्ट मुंबई हस्ते दिलीप भाई शाह, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, जबलपुर, श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन, श्री नरेश जैन शास्त्री, पन्ना।

जैन जगत में पहली बार

जयपुर (राज.): यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 8 अगस्त, 08 को विद्वत्रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया द्वारा बच्चों के लिये निर्मित '**नो टाइम पास सीरीज**' का भव्य विमोचन श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार किशनगढ़, श्री कैलाशचंदजी सेठी परिवार जयपुर और श्री दिलीपजी भाई परिवार मुम्बई द्वारा किया गया।

नो टाइम पास सीरीज में 'बच्चे खेलेंगे खेल और सीखेंगे तत्त्वज्ञान' पर आधारित तीन गेम्स हैं। 1. **No Time Pass**, 2. लगे रहो जीवराज एवं 3. **Our Life**। ये सभी गेम्स ह्न लूडो, साँप सीढ़ी के पैटर्न पर आधारित आकर्षक गेम्स हैं। इन्हें खेलने से जैनदर्शन के गूढ़ सिद्धान्तों के भाव–भासन की गारंटी है। इन्हें बड़े भी बच्चों के साथ खेल सकते हैं । प्राप्ति के लिये सम्पर्क करें ह्न

1. दिव्यध्वनि प्रचार–प्रसार ट्रस्ट, ए ह्न 1704, गुरुकुल टॉवर, जे. एस. रोड़, दहीसर (वेस्ट), मुम्बई ह्न 400068
फोन ह्न02228943250, मोबाइल ह्न 98821927322

2. श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए ह्न 4, बापूनगर, जयपुर –15
फोनह्न0141–2707458/2705581, मो. ह्न 9829273655

जैन विद्यार्थियों के लिये सुनहरा अवसर

ज्ञान ज्योति स्कॉलरशिप

कुंडलपुर वाले बड़े बाबा श्री आदिनाथ भगवान की असीम कृपा से अभिलाषा एकेडमी द्वारा ज्ञानज्योति स्कॉलरशिप आरम्भ की गई है। इसके अन्तर्गत निर्धन जैन बच्चों को **100%** स्कॉलरशिप एवं समस्त जैन विद्यार्थियों को 50% स्कॉलरशिप प्रदान कर **IIT - JEE** की तैयारी Super 30 Technique के द्वारा करायी जाती है।

Super 30 Technique **IIT - JEE** की तैयारी करने हेतु ऐसी तकनीक है, जिसमें एक बैच में सिर्फ 30 विद्यार्थियों को योग्य अनुभवी फेकल्टी टीम द्वारा वर्षभर गहन अध्ययन कराया जाता है। यदि आप या आपका बच्चा 9 वीं, 10 वीं, 11 वीं या 12 वीं कक्षा में अध्ययनरत है, तो तुरन्त उसे इस स्कॉलरशिप का लाभ देवें। एकेडमी द्वारा ड्रोपर बैच भी प्रारम्भ किया गया है।

ह्न सम्पर्क–सूत्र

अभिलाषा एकेडमी फोर **IIT - JEE**
209, ओणम प्लाजा, नियर इन्डस्ट्री हाउस,
ओल्ड पलासिया, ए. बी. रोड़, इन्दौर
मैनेजिंग डायरेक्टर ह्न नेमीचंद जैन इंजिनियर (सुसनेरवाले), इन्दौर।
0946606898, 9926452025, 2549909

सम्पादक संघ की नवीन कार्यकारिणी गठित

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ के अध्यक्ष श्री रवीन्द्र मालव ने कार्यकारिणी का गठन निम्नप्रकार किया।

संरक्षक ह्न सर्व श्री स्वदेशभूषण जैन दिल्ली, डॉ. हुकमचंद भारिल्ल जयपुर, श्रीमती सरयू दफ्तरी मुम्बई, **परामर्शदाता ह्न** श्री नरेन्द्रप्रकाश जैन फिरोजाबाद, श्री नीरज जैन सतना, श्री कपूरचंद पाटनी गोहाटी, प्रा. लीलावती जैन जलगांव, डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल अमलाई, श्री मिलापचंद डंडिया जयपुर, **अध्यक्ष ह्न** श्री रवीन्द्र मालव ग्वालियर, **कार्याध्यक्ष ह्न** डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा कोलकाता, श्री विजयकुमार जैन मुम्बई, **उपाध्यक्ष ह्न** श्री नरेन्द्रकुमार जैन अजमेर, डॉ. नीलम जैन गुड़गांव, डॉ. शेखरचंद जैन अहमदाबाद, श्री सतीश जैन दिल्ली, **महामंत्री ह्न** श्री अखिल बंसल जयपुर, डॉ. नरेन्द्र भारती सनावद, डॉ. ज्योति जैन खतौली, डॉ. महेन्द्र मनुज इन्दौर, **संयुक्त मंत्री ह्न** श्री नवनीत जैन मेरठ, **संगठन मंत्री ह्न** ब्र. जिनेश मलैया इन्दौर, **प्रचार मंत्री ह्न** श्री अकलेश जैन अजमेर, **कोषाध्यक्ष ह्न** श्री महेन्द्रकुमार पाटनी जयपुर,

सदस्य ह्न माणिकचंद पाटनी इन्दौर, सुरेशचंद जैन बारौलिया आगरा, भरत इन्दरचंद पापड़ीवाल औरंगाबाद, प्रवीन जैन लोनी, विराग शास्त्री जबलपुर, ओ. के. जैन दिल्ली, रमाकांत जैन लखनऊ, प्रो. माणकचंद जैन उदयपुर, श्री प्रमोद पण्डित सांगली, श्री शांतिनाथ के. होतपेटे हुबली।

दीपावली पर पटाखा विरोधी पोस्टर मंगाकर अहिंसा अभियान संचालित करें

वीर निर्वाण महोत्सव दीपावली पर पटाखों से होने वाली अनंत हिंसा से लोगों को जागरुक करने और अपने कर्तव्यों का स्मरण दिलाने के लिये आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन (रजि.) और अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा विगत 7 वर्षों से विशाल पोस्टर का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पोस्टर को लगभग 10,000 की संख्या में प्रकाशित कर सम्पूर्ण देश के अधिकांश जिनमंदिरों, तीर्थक्षेत्रों और सार्वजनिक संस्थाओं को भेजा जाता है। विगत 3 वर्षों से समाज के अनेक संगठनों ने इस कार्य को गति प्रदान की है। यदि आप भी अपने नगर में इस कार्य को संचालित करना चाहते हैं तो आप हमसे अधिक संख्या में पोस्टर मंगवायें। प्रति पोस्टर की सहयोग राशि 5 रू. है। आप अपनी आवश्यकतानुसार पोस्टर की संख्या लिखकर उसकी राशि '**सर्वोदय ज्ञानपीठ जबलपुर**' के नाम ड्राफ्ट, मनीआर्डर और चैक बनाकर सर्वोदय, 702, जैन टेलिकॉम, फूटाताल, जबलपुर म. प्र. के नाम से प्रेषित करें। 300 पोस्टर मंगाने वाले और 2100 रू. या इससे अधिक राशि का सहयोग करने वाले का नाम पोस्टर में प्रकाशित किया जायेगा।

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 4 सितम्बर 08 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग 23 दिन का समय शेष है, तथापि दिनांक 13 अगस्त 08 तक हमारे पास 413 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 12 अगस्त 08 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 351 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। ध्यान रहे, इनमें 202 स्थानों पर तो श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक एवं वर्तमान छात्र विद्वान ही प्रभावनार्थ जा रहे हैं। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है ह्न

विशिष्ट विद्वानों में ह्न 1.कोटा : बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा **2.मुम्बई (सीमंधर जिनालय-भारतीय विद्या भवन) :** डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर **3.जयपुर (टोडरमल स्मारक) :** पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर **4.रतलाम :** पण्डित पूनमचंदजी छाबडा इन्दौर **5.ग्वालियर (मुरार) :** ब्र. यशपालजी जैन जयपुर **६.सोनागिर :** पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि **7.अशोकनगर :** डॉ.उत्तमचंदजी जैन सिवनी **8.बीना :** पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन **9.मुम्बई (दादर) :** ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद **10.दिल्ली (विश्वासनगर) :** ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री खनियाँधाना **11. कोटा (रामपुरा) :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर **12. जबलपुर :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली **13.इन्दौर (साधना नगर) :** ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियाँधाना **14.छिन्दवाड़ा :** ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल' **15. भोपाल (कोहेफिजा) :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली **16.इन्दौर (शक्कर बाजार) :** पण्डित कपूरचंदजी 'कौशल' भोपाल **17. कोलकाता :** पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर **18.मुम्बई (भायन्दर) :** पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन **19.विदिशा (किलाअन्दर) :** पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा **20. मुम्बई (बोरीवली) :** पं. शैलेशभाई तलोद **21. बेसवा वि.विद्यालय :** पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर **22.अलीगढ :** पण्डित अशोकजी लुहाडिया मंगलायतन **23. जयपुर (आदर्शनगर, महावीर नगर) :** पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ।

विदेश में ह्न 1. लंदन : पण्डित विपिनजी शास्त्री श्योपुर।

मध्यप्रदेश प्रान्त

1. **इन्दौर (पलासिया) :** पं. अनिलजी शास्त्री भिण्ड 2. **उज्जैन :** पं. अनुभवप्रकाशजी कानपुर 3. **गुना (वीतराग-विज्ञान) :** ब्र. कल्पना बहन जयपुर 4. **भोपाल (चौक) :** पं. धनसिंहजी पिड़ावा 5. **भिण्ड (परमागम मंदिर) :** पं. प्रद्युम्नकुमारजी मुज्जफरनगर 6. **टीकमगढ़ :** पं. राजीवजी भिण्ड 7. **बदरवास :** पं. वीरेन्द्रवीर फिरोजाबाद 8. **ग्वालियर (फालका बाजार) :** पं. मनोजजी जबलपुर 9. **गड़ाकोटा :** पं. सुरेशचन्दजी भिण्ड 10. **कोलारस :** पं. पीयूषजी शास्त्री जयपुर 11. **सागर (महावीर जिनालय):** पं. प्रवीणजी शास्त्री जयपुर 12. **ग्वालियर (माधवगंज) :** पं. कान्तिकुमारजी पाटनी इन्दौर 13. **ग्वालियर (सोडा का कुआँ) :** पं. सुरेशजी टीकमगढ़ 14. **इन्दौर (साधना नगर) :** पं. महेन्द्रजी खनियाँधाना 15. **भोपाल (कस्तूरबानगर) :** पं. सतीशजी पिपरई 16. **बेगमगंज :** पं. राजेशजी शिवपुरी 17. **खुरई :** पं. अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई 18.**द्रोणगिरी :** पण्डित कोमलचंदजी जैन टडा 19.**खनियांधाना :** पं. संजयजी सेठी जयपुर 20. **केसली :** पं. अभयजी बदरवास 21. **जावरा :** पं. नेमीचन्दजी ग्वालियर 22. **भिण्ड (देवनगर) :** पं. अरूणजी बानपुर 23. **सिलवानी :** पं. संजयजी साव खनियाँधाना 24. **बण्डा :** पं. पुष्पेन्द्रजी बानपुर 25. **चन्देरी :** पं. नरेन्द्रजी जबलपुर 26. **अम्बाह :** पं. कैलाशचन्दजी बानपुर 27. **जबेरा :** पं. अशोकजी सिरसागंज 28. **करेरा :** पं. भगवतीप्रसाद शहाबाद 29. **मौ (बड़ा मन्दिर) :** पं. मनोजजी करेली 30. **शहडोल :** पं. अरूणजी मोदी सागर 31. **भोपाल (पिपलानी) :** पं. सन्मति मोदी खनियाँधाना 32. **छिन्दवाड़ा :** ब्र. सुनीलजी शिवपुरी 33. **शाहगढ़ :** पं. रमेशचन्दजी 'दाऊ' जयपुर 34. **सागर (तारण-तरण) :** पं. तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर 35. **शिवपुरी (शान्तिनाथ मन्दिर) :** पं. राजेन्द्रजी शिवपुरी 36. **शिवपुरी (वीरसागर कॉलजी) :** पं. विजयजी शिवपुरी 37. **अभाना :** पं. मुरारीलालजी नरवर 38. **इन्दौर (गांधीनगर) :** पं. लालारामजी साहु अशोकनगर 39. **इन्दौर (नन्दानगर) :** पं. मधुभाई जलगाँव 40. **इन्दौर (माणकचौक) :** पं. दिलीपजी बाकलीवाल 41. **देपालपुर (इन्दौर) :** पं. पदमजी गंगवाल इन्दौर 42. **मन्दसौर (गोल चौराहा) :** पं. अमितजी बीना (मौवाले) 43. **रन्नौद :** पं. शान्तिलालजी काला भिण्ड 44. **गोरमी :** पं. कैलाशचन्दजी अशोकनगर 45.**गंजबसौदा :** पं. चित्तरंजनजी छिन्दवाड़ा 46. **बीड :** पं. संजयजी बड़ामलहरा 47. **बनखेड़ी :** पं. सरदारमलजी बेरसीया 48. **गुना (बाजार मन्दिर) :** पं. शान्तिलालजी सोगाणी 49. **ग्वालियर (दानाओली) :** पं. पवनकुमारजी मौ 50. **मन्दसौर (कालाखेत) :** पं. महेशजी ग्वालियर 51. **मण्डलेश्वर :** पं. धीरजजी जबेरा 52. **चन्दला :** पं. निखलेशजी दलपतपुर 53. **शाजापुर :** पं. सतीशजी कासलीवाल 54. **हरदा :** वि. कुसुमलताजी हरदा 55.**दमोह (तारण-तरण) :** पं. सुरेन्द्रजी 'पंकज' छिन्दवाड़ा 56. **सिरोंज :** पं. अरूणजी 'ठगन' टीकमगढ़ 57. **शुजालपुर मण्डी :** पं. सीलचन्दजी जैन जबेरा 58. **शुजालपुर सिटी :** पं. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन 59.**गौरझामर :** पं. संजयजी (इंजि.) खनियांधाना 60. **मौ (बड़ा मन्दिर) :** पं. मनोजजी शास्त्री करेली 61. **निसईजी :** पं. पुष्पाबहन होशंगाबाद 62. **मकरोनिया (सागर) :** पं. अजितजी मडवैया

63. **खरगोन :** पं. प्रमोदजी जैन सागर ६४. **गुना :** पं. राजकुमारजी शास्त्री खनियांधाना ६५. **कटनी :** पं. संतोषजी शास्त्री दमोह ६६. **विदिशा :** डॉ. विनोदजी शास्त्री चिन्मय ६७. **गुना :** पं. सुरेशजी शास्त्री कोलारस ६८. **गुना :** पं. अनिलजी शास्त्री ६९. **सोनागिरि :** डॉ. मुकेशजी शास्त्री तन्मय, ७०. **सोनागिरि :** पं. अशोकजी शास्त्री रायपुर ७१. **सोनागिरि :** पं. चैतन्यजी शास्त्री खडैरी ७२. **छिन्दवाड़ा :** पं. ऋषभजी शास्त्री ७३. **नौगाव :** पं. शीतलकुमारजी शास्त्री गुडर ७४. **लिधौरा :** पं. राकेशजी शास्त्री 75. **धामनोद :** पं. सचिनजी शास्त्री जबेरा 76. **पोरसा :** पं. गणतंत्रजी शास्त्री बाँसवाड़ा 77. **सुखाजी :** पं. कपूरचन्दजी (भायाजी) सागर 78. **ग्वालियर :** पं. विनीतजी शास्त्री ग्वालियर 79. **नरवर :** पं. आशीषजी शास्त्री चिनौआ 80. **रांझी (जबलपुर) :** पं. गजेन्द्रजी शास्त्री भिण्डर 81. **कुचड़ौद :** पं. निलेशजी शास्त्री मुहारी 82. **आरोन :** पं. विशेषजी शास्त्री बड़ामलहरा 83. **निसईजी :** पं. सजलजी शास्त्री, जयपुर 84. **ग्वालियर :** विकासजी खनियांधाना 85. **ग्वालियर :** पं. अनुराजजी फिरोजाबाद 86. **घुवारा :** पं. जीवनजी शास्त्री 87. **भोपाल :** पं. अंकुरजी शास्त्री दहेगांव 88. **भोपाल :** पं. तन्मयजी शास्त्री खनियांधाना 89. **भोपाल :** पं. चैतन्यजी शास्त्री खडैरी 90. **भोपाल :** पं. नितिनजी शास्त्री खडैरी 91. **मगरौन :** पं. हेमचन्दजी दमोह 92. **होशंगाबाद :** पं. अभिषेकजी मंगलायतन।

राजस्थान प्रान्त

१. जयपुर : डॉ. श्रेयांसकुमारजी शास्त्री **२. जयपुर :** पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री 3. **कोटा (इन्द्र विहार) :** पं. कमलेशजी मौ 4. **अलवर (मु. मंडल):** पं. सुशीलजी राघौगढ 5. **पिडावा :** वि. पुष्पा बहन खण्डवा 6. **अजमेर :** पं. गुलाबचन्दजी बीना 7. **उदयपुर (मु. मंडल)** : पं. शिखरचन्दजी बीना 8. **उदयपुर (सेक्टर–11) :** पं. देवेन्द्रजी सिगोड़ी 9. **उदयपुर (सेक्टर–3) :** पं. विकासजी शास्त्री बानपुर 10. **उदयपुर (गायरीयावास) :** पं. रविजी ललितपुर 11. **बून्दी (मलाह शाहजी का मन्दिर) :** पं. धर्मचन्दजी जयथल 12. **बून्दी (नैनवा रोड़) :** पं. संजयजी हरसौरा रावतभाटा 13. **जौलाना :** पं. प्रमोदजी तामटीया 14. **रावतभाटा :** पं. अरूणजी लालोनी 15. **जयपुर (आदर्शनगर) :** पं. विनोदजी जबेरा 16. **अलवर :** पं. अजितजी शास्त्री अलवर 17. **भरतपुर :** पं. अरूणजी बण्ड अलवर 18. **रामगढ़ (अलवर) :** पं. प्रेमचन्दजी अलवर 19. **जयपुर (वरूणपथ) :** पं. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर 20. **जयपुर (सिविल लाईन) :** पं. ताराचन्दजी सोगाणी जयपुर 21. **भीलवाड़ा :** डॉ. मानमलजी कोटा 22. **जयपुर–बड़े दीवानजी (राज.जैन सभा) :** डॉ. दीपकजी जैन 23. **कानोड :** पं. शंशाकजी शास्त्री सागर 24. **किशनगढ़ :** पं. तपिशजी शास्त्री उदयपुर 25. **जयपुर (जवाहरनगर) :** पं. परेशजी शास्त्री जयपुर 26. **अलीगढ़ :** पं. जगदीशजी पवार उज्जैनीया 27. **भीण्डर :** पं. संजयजी लोहरीया 28. **लुणदा :** पं. आशीषजी शास्त्री अरथुना 29. **सेमारी :** पं. मथुरालालजी इन्दौर 30. **कुरावड़** : पं. कमलेशजी बण्डा 31. **प्रतापगढ़ (मुमुक्षु मंडल)** : पं. मीठालालजी कलिंजरा 32. **कुशलगढ़** : पं. अमितजी शास्त्री बाँसवाड़ा 33. **बिजौलिया :** पं. निर्मलकुमारजी सागर ३४. **भवानीमण्डी :** डॉ. धनकुमारजी शास्त्री ३५. **विराटनगर :** पं. वीरेन्द्रकुमारजी शास्त्री ३६. **अलवर :** पं. अजितकुमारजी शास्त्री ३७. **दौसा :** पं. प्रमोदजी शास्त्री टीकमगढ ३८. **दौसा :** पं. संजयजी शास्त्री भोगांव ३९. **कोटा (मुमुक्षु आश्रम) :** पं. रतनचन्दजी शास्त्री ४०. **रूपहेडीकला :** पं. पद्माकरजी मुंजोले ४१. **लालसोट :** पं. विवेकजी शास्त्री महाजन ४२. **रावतभाटा :** पं. रविकुमारजी शास्त्री विदिशा ४३. **जयपुर (बगरुवालान) :** डॉ. विमलकुमारजी शास्त्री ४४. **निम्बाहेडा :** पं. सुनीलकुमारजी शास्त्री नाके ४५. **जयपुर :** पं. राजेशजी शास्त्री शाहगढ ४६. **दौसा:** पं. अध्यात्मप्रकाशजी कोलारस 47. **कोटा (गिरधरपुरा) :** पं. मनीषजी शास्त्री पिडावा ४८. **जयपुर (सोनियान मंदिर) :** पं. अनिलजी शास्त्री सोजना ४९. **जयपुर :** पं. विक्रान्तजी पाटनी झालरापाटन ५०. **जयपुर :** डॉ. भागचन्दजी शास्त्री 51. **जयपुर :** पं. नीतेशजी शास्त्री डडूका 52. **जयपुर :** पं. श्रुतेशजी शास्त्री सातपुते 53. **जोधपुर :** पं. राजकमलजी दोशी 54. **बांसवाड़ा :** पं. नितुलजी शास्त्री भिण्ड 55. **उदयपुर (मण्डी की नाल) :** पं. खेमचन्दजी शास्त्री ।

महाराष्ट्र प्रान्त

1. **मुम्बई (घाटकोपर) :** ब्र. नन्हेलालजी सागर 2. **मुम्बई (एवरशाइन नगर) :** पं. विपिनजी शास्त्री आगरा 3. **मुम्बई (मलाड) :** पं. संजयजी जेवर ४.**मुम्बई (जोगेश्वरी) :** पं. अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल 5. **मुम्बई :** पं. परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल 6. **सांगली :** पं. महावीरजी पाटील 7. **मुम्बई (दहीसर):** पं. कमलकुमारजी मलैया जबेरा 8. **मुम्बई (मीरा रोड़)** : पं. कमलचन्दजी पिड़ावा 9. **मुम्बई (भुलेश्वर) :** डॉ. महेशजी भोपाल 10. **मुम्बई (सीमंधर जिनालय) :** पं. ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई 11. **मुम्बई (दादर) :** पं. सुनीलजी धवल 12. **मुम्बई (चेम्बुर) :** पं. सुमेरचन्दजी बेलोकर मुम्बई 13. **पुणे (स्वा. मंडल) :** पं. अभयजी शास्त्री खैरागढ़ 14. **पुणे (जैन बोर्डिंग):** पं. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई 15. **परभणी :** पं. कीर्तिकुमारजी गोरे 16. **जलगांव :** पं. बाबूभाई मेहता फतेपुर 17. **हिंगोली :** पं. नागेशजी शास्त्री पिड़ावा 18. **नागपुर (इतवारी) :** पं. सुदीपजी जैन बीना 19. **मलकापुर :** पं. सुरेन्द्रजी उज्जैन 20. **वाशिम :** पं. सचिनजी खनियांधाना 21. **सोलापुर (बुबने) :** पं. रवीन्द्रजी काले कारंजा 22. **बोरी :** पं. संतोषजी सावजी 23. **कारंजा (लाड) :** पं. विनोदजी गुना 24. **पंढरपुर :** पं. सत्येन्द्रजी मौवाले 25. **सेनगाँव :** पं. शीतलजी हेरवाडे कोल्हापुर 26. **मुम्बई :** डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई 27. **देवलाली :** पं. सुबोधजी सिवनी 28. **सेलु :** पं. जीवराजजी जैन नाशिक 29. **जयसिंगपुर :** पं. विजयसेनजी पाटील 30. **नागपुर :** पं. जितेन्द्रजी राठी 31. **चिखली :** पं. संदीपजी चौगुले व्हन्नुर 32. **अकलुज :** पं. नन्दकिशोरजी माँगुलकर 33. **साडवली :** पं. संयमजी शेटे जयपुर 34. **औरंगाबाद :** पं. चिंतामणजी भूस जयपुर 35. **मालशिरस :** पं. अक्षयजी वाडकर सांगली 36. **पुणे (चिंचवड़) :** पं. वीरेन्द्रजी हट्टी, बाँसवाड़ा 37. **वरूड :** पं. आतिशजी जोगी जयपुर 38. **डासाला :** पं. यू. बसंतजी जयपुर 39. **रिसोड :** पं. प्रकाशजी उकलकर जयपुर 40. **वर्धा :** पं. निशांतजी जैन बाँसवाड़ा 41. **अंबड़ :** पं. अभिषेकजी जोगी नाशिक 42. **अक्कलकोट :** पं. अजयजी गोरे फालेगाँव 43. **मालेगाँव**

: पं. अमोल पाटील बांसवाड़ा 44. **फालेगाँव :** पं. अनेकान्तजी जैन बाँसवाड़ा 45. **वसमत :** पं. रवीन्द्रजी मसलकर अंबड 46. **धरनगाँव** : पं. निशान्तजी पाटील बाँसवाड़ा 47. **पानकन्हेरगाँव :** पं. संदेशजी बोरालकर जयपुर 48. **अणदुर :** पं. ऋषिकेशजी घोडके जयपुर 49. **यवतमाल :** पं. विजयजी राऊत रिठद 50. **बेलोरा :** पं. जयेशजी रोकडे जयपुर 51. **औरंगाबाद :** पं. संजयजी शास्त्री राउत ५२. **सोलापुर :** पं. विक्रान्तजी शहा 53. **मालेगांव :** पं. संजयजी महाजन 54. **नागपुर :** पं. विरागजी शास्त्री 55. **नागपुर :** पं. मनीषजी सिद्धान्त 56. **देउलगांवराजा :** पं. प्रसन्नजी शेटे 57. **देउलगांवराजा :** पं.विजयजी आह्वाने 58. **देउलगांवराजा :** पं. उमाकान्तजी बण्ड 59. **देउलगांवराजा :** पं. सत्येन्द्रजी मिरकुटे 60. **मुम्बई (कांदीवली) :** किशोरजी धोंगडे 61. **शिरडशहापुर :** पं. प्रशांतजी शास्त्री राजुरा 62. **मुम्बई :** पं. सोनू शास्त्री पोरसा 63. **परभणी** : पं. संतोषजी शास्त्री उखलकर 64. **परभणी** : पं. प्रशांतजी शास्त्री उखलकर 65. **सोलापुर** : पं. विजयजी कालेगोरे 66. **सेलू** : पं. अनंतजी विश्वंभर 67. **सोलापुर :** पं. प्रशांतजी मोहरे 68. **दानोली:** पं. किरणजी पाटील 69. **पाथर्डी :** पं. चैतन्यजी सातपुते 70. **मुम्बई :** पं. जितेन्द्रजी शास्त्री 71. **मुम्बई :** विदुषी मुक्ति जैन ७२. **शिरडशहापुर :** पं. महेन्द्रजी मिरकुटे आसेगाँव 73. **ऐलोरा :** पं. गुलाबचन्दजी बोरालकर 74. **कारंजा:** पं. आलोकजी शास्त्री।

उत्तरप्रदेश प्रान्त

1. **इटावा :** पं. प्रकाशदादा 'ज्योतिषाचार्य' मैनपुरी 2. **रुडकी :** पं. प्रकाशदादा झांझरी उज्जैन 3. **सरधाना :** पं. अनिलजी (इंजि.) भोपाल 4. **अलीगढ़ (मंगलायतन) :** पं. दिनेशभाई शहा 5. **अलीगढ़ (मंगलायतन) :** डॉ. उज्जवला बहन शहा 6. **मैनपुरी :** पं. चन्दूभाई मेहता, फतेपुर 7. **खतौली :** पं. मनीषजी शास्त्री 8. **बानपुर :** पं. रमेशजी 'मंगल' सागर 9. **मुज्जफरनगर :** पं. महेन्द्रजी भिण्ड 10. **ललितपुर :** पं. अजितजी फिरोजाबाद 11. **कुरावली :** पं. अशोकजी उज्जैन 12. **मेरठ (तीरगरान) :** पं. जागेशजी शास्त्री जबेरा 13. **बड़ौत :** पं. शीतलप्रसादजी पाण्डे उज्जैन 14. **रानीपुर :** पं. निर्मलकुमारजी एटा 15. **गुरसराय :** डॉ. भरतजी उज्जैन 16. **बांधा :** ब्र. सुधाबहन एवं पं.आकेशजी छिन्दवाड़ा 18. **सहारनपुर :** पं. पदमजी अजमेरा रतलाम19. **ललितपुर :** पं. भानुकुमारजी शास्त्री 20. **धामपुर :** पं. प्रदीपजी शास्त्री खतौली 21. **सासनी :** पं. सुधीरजी शास्त्री जबलपुर 22. **मेरठ (गेंदालालजी मंदिर) :** पं. शाकुलजी शास्त्री 23. **खतौली :** पं. सोनू शास्त्री फिरोजाबाद 24. **झांसी :** पं. गजेन्द्रजी शास्त्री भरतपुर।

गुजरात प्रान्त

1. **अहमदाबाद (वस्त्रापुर) :** पं. अरहंतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन 2. **अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पं. राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा 3. **अहमदाबाद (मणीनगर) :** पं. रीतेशजी शास्त्री डडुका 4. **अहमदाबाद (पालडी) :** पं. विवेकजी छिंदवाड़ा 5. **अहमदाबाद (ओढव) :** पं. मांगीलालजी कुरावली 6. **अहमदाबाद (मेघाणीनगर) :** पं. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर 7. **अहमदाबाद (आशीषनगर) :** पं. अभिनवजी शास्त्री मैनपुरी 8. **अहमदाबाद (सरसपुर) :** पं. नितेशजी शास्त्री जयपुर 9. **हिम्मतनगर :** पं. श्रेणिकजी जबलपुर 10. **राजकोट :** पं. वजुभाई अजमेरा एवं पं. सुनीलजी जैनापुरे 11. **दाहोद :** वि. पुष्पाबेन एवं ज्ञानधारा बेन उज्जैन 12. **रखियाल :** पं. महेशजी भण्डारी भोपाल 13. **बड़ौदा :** पं. डॉ. महावीरप्रसादजी उदयपुर 14. **तलोद :** पं. जयकुमारजी बारां 15. **मोरबी :** पं. सुनीलजी बारां 16. **वापी :** पं. वरूणजी शास्त्री मुम्बई **१७. दाहोद :** पं. राकेशजी दोशी परतापुर 18. **अहमदाबाद (वस्त्रापुर) :** पं. ध्रुवेशजी शास्त्री 19. **अहमदाबाद (बहेरामपुरा) :** पं. नवीनजी शास्त्री अहमदाबाद20. **दाहोद :** पं. वीरेन्द्रजी शास्त्री डडूका ।

अन्य प्रान्त

1. **कोलकाता :** पं. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर 2. **बेलगाँव :** ब्र. अचलजी ललितपुर 3. **बैंगलौर :** पं. देवेन्द्रजी बिजौलिया 4. **पुरूलिया :** पं. अविरलजी विदिशा 5. **कोचीन :** पं. अश्विनजी नानावटी 6. **दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट) :** पं. कस्तूरचन्दजी विदिशा 7. **चेन्नई (तिरुमलै) :** पं. जम्बूकुमारजी जैन 8. **रानीपुर (हरिद्वार) :** पं. मनीषजी 'कहान' खडैरी 9. **पोन्नुर :** पं. बाँके बिहारी मिश्रा10. **बैंगलोर (विल्सनगार्डन) :** पं. किशोरजी शास्त्री 11. **बेलगांव :** पं. महावीरजी बखेडी 12. **रेवाडी (हरियाणा) :** पं. कैलाशचन्दजी शास्त्री मोमासर 13. **धारवाड :** पं. भरतेशजी शास्त्री शेडवाल 14. **चम्पापुर :** पं. विमोशजी शास्त्री खडैरी 15. **चम्पापुर :** पं. सोनलजी शास्त्री जबेरा 16. **मन्डया (कर्नाटक) :** पं. अनन्तराजजी शास्त्री 17. **हैदराबाद :** पं. नयनजी शास्त्री 18. **लुधियाना (पंजाब):** पं. निखिलजी शास्त्री एवं पं. राजकुमारजी 19. **बीजापुर (कर्नाटक) :** पं. रमेशजी शास्त्री शिरहट्टी 20. **कोलकाता :** पं. अभिनयजी शास्त्री जबलपुर ।

दिल्ली : यहाँ डॉ. वीरसागरजी, डॉ. सुदीपजी आदि **४२ ख्यातिप्राप्त विद्वान** प्रवचनार्थ निश्चित किये गये हैं।

पाठशाला का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

फिरोजाबाद (उ.प्र.) : यहाँ श्री वीतराग–विज्ञान पाठशाला हनुमानगंज का वार्षिक समारोह दिनांक ६ जुलाई, ०८ को श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, विभव नगर में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन थे। मंगलाचरणोपरांत पाठशाला के संचालक श्री वीरेन्द्रवीर जैन द्वारा पाठशाला की रिपोर्ट प्रगति, उपलब्धियाँ एवं आवश्यकतायें बताते हुये प्रस्तुत की गई। पाठशाला में शिक्षण का कार्य श्रीमती सरोजलता जैन एवं श्रीमती पूनम जैन द्वारा किया जाता है। इसमें लगभग १३० बच्चे जैनधर्म का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करते हैं।

पाठशाला की इस वर्ष की उपलब्धि यह है कि १९ बच्चों द्वारा वीतराग–विज्ञान शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। इसके तुरंत बाद पाठशाला के बच्चों द्वारा लघु नाटिका 'संस्कारों का महत्व' प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम में पाठशाला के प्रशिक्षण प्राप्त एवं प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले समस्त बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

संचालित पाँच कक्षाओं में कु. तासू जैन, कु. नन्दिनी जैन, अपूर्व जैन, रजत जैन एवं कु. प्रिंसी जैन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

17 अगस्त 2008, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

वैराग्य समाचार

१. सहारनपुर निवासी पं. श्री देवचंदजी का चिलकाना में ८७ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप सहारनपुर के सरकारी कॉलेज में संस्कृत के लेक्चरर थे एवं लगभग २५ वर्ष से टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से प्रवचनार्थ जाया करते थे। गुरुदेवश्री के सानिध्य में भी आप लगभग २५ वर्ष तक सोनगढ जाते रहे । ज्ञातव्य है कि आप पण्डित विमलकुमारजी जैन जलेसरवालों के नानाजी थे।

2. अलवर निवासी श्री पवनकुमारजी जैन (सी. ए.) ट्रस्टी श्री कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट अलवर का दिनांक 28 जुलाई,08 को देहावसान हो गया। आप कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टी थे। आपने नवनिर्मित श्री रत्नत्रय दि. जिनमंदिर निर्माण हेतु भूमि प्रदान करने से लेकर मंदिर निर्माण तक तन-मन-धन से अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया था। आपके चिर वियोग से अलवर जैन समाज में अपूरणीय क्षति हुई है।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

मनीषकुमार शास्त्री को पीएच. डी.

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक **श्री मनीषकुमार जैन शास्त्री** को डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के हिन्दी विभाग से उनके शोध विषय '**आ. अभिनवगुप्त एवं आ. रामचंद्र शुक्ल की रस संबंधी मान्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन**' पर पीएच.डी की उपाधि प्रदान की गई। आपके शोध निर्देशक प्रो. हौसिला प्रसाद सिंह थे। आप वर्तमान में श्री कुन्दकुन्द जैन स्नातकोत्तर महा. **खतौली** में व्याख्याता पद पर कार्यरत हैं।

ज्ञातव्य है कि आप इस उपलब्धि के पूर्व यू.जी.सी. द्वारा आयोजित नेट परीक्षा हिन्दी विषय में पास कर चुके हैं। आपको डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर द्वारा गौर सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है ।

जैनपथ प्रदर्शक परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट – एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

डाक टिकट भेजकर नि:शुल्क मंगा लें

पण्डित खेमचंद जैन जैनदर्शनाचार्य की धर्मपत्नी श्रीमती नीलम जैन ने देशभर में संचालित वीतराग-विज्ञान पाठशालाओं के बच्चों की सुविधा हेतु वीतराग-विज्ञान प्रश्नोत्तरी भाग ह्न १ का लेखन किया है, जिसमें पण्डित हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग ह्न १ की सम्पूर्ण विषय-वस्तु को सरल तरीके से प्रश्नोत्तर के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जिसको भी आवश्यकता हो, वह निम्न पते पर ७ रुपये के फ्रेश डाक टिकट भेजकर नि:शुल्क मंगा लेवें। आप पूर्व में बालबोध प्रश्नोत्तरी के तीन भागों का भी लेखन कर चुकी हैं। **ह्न खेमचंद जैन**

५७८, हिरणमगरी सेक्टर ह्न १३, महावीर विद्या मंदिर स्कूल के सामने, उदयपुर ह्न ३१३००१ (राज.) मो. ९४१४७११०३८

ऋषभायतन में शिलान्यास समारोह सम्पन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ दिनांक १८ जुलाई, ०८ को श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट पुरानी मंडी अजमेर के अंतर्गत वैशालीनगर अजमेर स्थित निर्माणाधीन अध्यात्मधाम ऋषभायतन में नवनिर्मित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के अंतर्गत मनोहारी वेदियों, शिखरों एवं मानस्तम्भ का भव्य शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर विधान एवं शिलान्यास विधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. पण्डित जतीशचंदजी शास्त्री, दिल्ली एवं इनके सहयोगी पण्डित सुनील धवल भोपाल, पण्डित सुबोध शास्त्री शाहगढ़ द्वारा सम्पन्न करायी गई।

इस प्रसंग पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित देवेन्द्रजी सिंगोड़ी एवं पण्डित अनिलजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला।

हार्दिक शुभकामनायें !

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक **श्री जितेन्द्र राठी** ने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, लखनऊ से शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) में प्रथम एवं समस्त संस्थान में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। ज्ञातव्य है कि आपने साहित्याचार्य में राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक प्राप्त किया था। आपको हार्दिक शुभकामनायें !

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.

प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)

प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –

ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

फोन : (0141) 2705581, 2707458

E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127